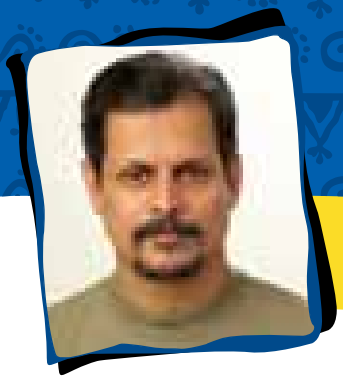

22 एक यात्रा का सुगमीकरण

नटेश उल्लाल

सारा अधिगम अनुभव और चिन्तन के माध्यम से हो रहा था। बच्चे अवलोकन कर रहे थे, सोच रहे थे, खोज कर रहे थे और अपनी समझ के अनुसार काम कर रहे थे।

मैं उसे देख रहा था। वह बड़े आत्मविश्वास के साथ खड़ी थी, उसने कैमरे को प्रोजेक्टर से जोड़ा और 'प्ले' का बटन दबाया। बाजरे का दलिया बनाती हुई पुट्टम्मा नजर आई। आकर्षक कोणों से लिए गए अच्छे शॉट्स थे और कैमरा बिलकुल हिल नहीं रहा था, लगता था कि ये शॉट्स किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा लिए गए हैं जो वीडियो कैमरे का प्रयोग लम्बे समय से कर रहा है। "इस वीडियो को किस टीम ने शूट किया है?" मैंने बड़े उत्साह से पूछा। रश्मि ने गर्व से कहा, "हमें अपनी फिल्म के लिए यह शॉट चाहिए था और चूँकि मेरी टीम के बाकी लोग आज सुबह व्यस्त थे; इसलिए मैं सुबह साढ़े छह बजे अकेले इसे शूट करने गई।" मैंने उसकी टीम के अन्य बच्चों की ओर देखा तो उन्होंने हामी में सिर हिलाया। पर मेरे लिए इस घटना को समझना अभी भी मुश्किल था।

सिर्फ दो हफ्ते पहले की बात है। मैं बच्चों के हाथों में बारी–बारी से वीडियो कैमरा दे रहा था। उनसे कह रहा था कि वे उसे पकड़ें, उसका अनुभव करें और जानकारी प्राप्त करें। साथ ही मैं कैमरे के हिस्सों और कामों के बारे में बताता जा रहा था। उन सारे बच्चों में रश्मि काफी घबराई हुई–सी थी और कैमरा छूने में भी डर रही थी। जब उसके साथियों ने कैमरे को पकड़ने–देखने पर जोर डाला तो उसने उसे बिना देखे अगले बच्चे को दे दिया। मैंने बच्चों की कक्षा के अनुसार चार समूह बनाए। हर समूह को एक वीडियो कैमरा दिया। उनसे कहा गया कि उन्हें जो कुछ भी अच्छा लगे वे उसे शूट कर सकते हैं, केवल इस बात का ध्यान रखें कि टीम के हर सदस्य को मौका मिलना चाहिए। यह सभी के लिए एक मजेदार सत्र था। बच्चे कैमरा हाथ में लेकर इसका आनन्द उठाने के लिए चल दिए। इसके बाद एक स्क्रीनिंग और फीडबैक सत्र हुआ जिसमें सबने अपने–अपने शॉट्स दिखाए और दूसरों ने उन पर अपने विचार प्रस्तुत किए। जब रश्मि की बारी आई तो उसके पास दिखाने को कुछ नहीं था। मैंने सोचा कि वह काम न करने के लिए कोई बहाना बनाएगी, लेकिन वह बस जमीन की ओर देखती रही। अगले दिन भी यही हुआ। मुझे लगा कि चूँकि रश्मि बहुत घबराती है इसलिए उसकी टीम के अन्य लोग उसे कैमरा चलाने ही नहीं देते होंगे। तीसरे दिन मैंने टीम से कहा कि वे इस बात को सुनिश्चित करें कि रश्मि भी कैमरे को संचालित करे। उन्हें यह चेतावनी भी दी गई कि अगर रश्मि ने किसी फुटेज की शूटिंग नहीं की तो उन्हें भी भविष्य में कैमरा चलाने नहीं दिया जाएगा। अब तो सातवीं कक्षा के इन बच्चों के लिए यह बात अपने आपको सिद्ध करने का मुद्दा बन गई! वे इस विषय पर अपने समूह में बड़ी गम्भीरता से चर्चा करने लगे। कुछ देर बाद वे कैमरे के साथ बाहर चले गए। उनके चेहरे को देखकर लग रहा था मानो उन्होंने इस संकट से निपटने के लिए रणनीति बना ली है। मैं यह जानने को उत्सुक था कि वे इस मुद्दे को कैसे सुलझाएँगे और जो कुछ मैंने देखा वह अत्यन्त आश्चर्यजनक था। रश्मि के समूह के सारे सदस्य उसके सलाहकार बन गए थे! वे उसे प्रोत्साहित कर रहे थे, मार्गदर्शन दे रहे थे, कैमरे को समझने में उसकी मदद कर रहे थे! आखिरकार रश्मि कैमरे का संचालन करने लगी।

सारी टीमें वापस आईं और अपने–अपने वीडियो दिखाने लगीं। अब रश्मि की बारी आई। पहले शॉट को देखते ही सब हँसने लगे। शॉट्स बेहद अस्थिर थे और कुछ दृश्य तो उलटे थे। मैंने पर्दे से नजरें हटाकर रश्मि की ओर देखा, लेकिन वह वहाँ नहीं थी! जब सबने हँसना शुरू किया था, तभी वह गायब हो गई थी। मैंने अपनी सहयोगी इनी से रश्मि को ढूँढ़ने के लिए कहा। कुछ मिनटों बाद रश्मि इनी का सहारा लिए झिझकते हुए अन्दर आई। उसकी आँखों में आँसू भरे थे और उनमें बेचैनी और तनाव के भाव भी थे। वह चुपचाप जमीन की ओर ताक रही थी।

और आज यह मानना मुश्किल था कि यह वही रश्मि है जो इस समय विश्वास से भरी हुई है। वह भी सिर्फ दो हफ्तों में! उसने पूरा शूट अकेले किया था, सारे शॉट्स स्थिर हाथों से लिए थे, और अब बड़े गर्व से सबको वीडियो दिखा रही थी! मेरे लिए यह क्षण रहस्योद्घाटन का क्षण था। मेरे सामने परिवर्तन, रूपान्तरण और विकास की अपार सम्भावनाएँ खुली पड़ी थीं। मुझे लगा कि हालाँकि इसमें सन्देह नहीं कि दृश्य माध्यम (विजुअल मीडियम) सम्प्रेषण का एक शक्तिशाली उपकरण है, लेकिन दृश्य सम्प्रेषण की भाषा में महारत हासिल करने के लिए उपलब्ध कराया गया स्थान और कौशल इससे कहीं अधिक कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

यह सब शुरू हुआ एक फोन कॉल से। वेल्स के वनपीपल प्रोडक्शन्स से सन्दीप दिनकर ने मुझे फोन किया और इस प्रोडक्शन्स के अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल प्रोजेक्ट के बारे में अपने विचार बताए। बात दिलचस्प लगी। उन्होंने यह भी कहा कि वे भारत में एक साथी स्कूल की तलाश में हैं। मेरे दिमाग में जो स्कूल आया वह था चामराजनगर का दीनबन्धु चिल्ड्रन्स होम। दीनबन्धु ट्रस्ट के संस्थापक श्री जयदेव के साथ इस बारे में बात हुई। उन्होंने इस विचार का स्वागत करते हुए कहा कि, "यह बच्चों के ज्ञानवर्धन एवं उनके क्षितिज को व्यापक करने के लिए एक बढ़िया कार्यक्रम होगा।" उन्होंने तत्काल दीनबन्धु स्कूल के शिक्षकों और बच्चों के साथ एक मीटिंग आयोजित की। उन सबने भी इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने में खुशी जाहिर की। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल प्रोजेक्ट शुरू हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल प्रोजेक्ट क्या है?

वनपीपल प्रोडक्शन्स वेल्स में स्थापित एक सामूहिक संस्था है जो विभिन्न मुद्दों पर लोगों को शिक्षित करने के लिए मीडिया का उपयोग करती है। यह संस्था इस विचारधारा में बहुत विश्वास करती है कि संस्कृति, भाषा, जाति और वर्ग में अन्तर होते हुए भी दुनिया भर के लोग मौलिक रूप से एक हैं। वनपीपल का मानना है कि इस समझ के विकास के लिए विभिन्न संस्कृतियों के लोगों का आपस में अन्त:क्रिया करना आवश्यक है। इस अन्त:क्रिया के लिए स्थान मुहैया कराने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल प्रोजेक्ट (आई.एस.पी.) की शुरुआत हुई। आई.एस.पी. छात्रों को फिल्म एवं नवीन मीडिया के माध्यम से अन्त:क्रिया करने और सम्प्रेषण करने के लिए स्थान उपलब्ध कराता है। यह उन्हें लघु फिल्में बनाने के लिए आवश्यक उपकरण एवं कौशल प्रदान करता है। इस प्रोजेक्ट के उद्देश्य ये हैं–

- दुनिया के अलग–अलग विचारों और परिप्रेक्ष्यों को समझना
- दुनिया को देखने का नजरिया बदलना और विभिन्न देश के लोगों के बीच के सांस्कृतिक अन्तर को समझना
- अन्त:सम्बद्धता को समझना
- कार्य करने के लिए शक्ति प्रदान करना
- बेहतर भाषा कौशल/सम्प्रेषण कौशल का विकास करना
- टीम वर्क और सहयोग के महत्त्व को समझना
- प्रोजेक्ट की योजना बनाना सीखना
- अन्तरव्यैक्तिक कौशल/सम्बन्ध बनाने और नेटवर्किंग (स्थानीय और वैश्विक) का विकास करना
- विवेचनात्मक सोच–विचार और चिन्तन की शुरुआत करना
- तकनीकी कौशलों का विकास करना–फिल्म/सम्पादन/आई.टी.

वेल्स और स्वीडन में एक–एक और भारत में दो स्कूल इस प्रोजेक्ट में भाग लेने वाले थे। इन चार स्कूल के प्रतिभागियों को एक निर्धारित समयावधि में अपनी पसन्द के एक विषय पर वीडियो फिल्म बनानी थीं। इस प्रक्रिया में वे, एक टीम के रूप में, विषय का चयन करना, उस पर शोध करना, योजना बनाना, शूट करना और सम्पादन करना सीखने वाले थे। इस प्रोजेक्ट की एक और महत्त्वपूर्ण बात थी स्काइप और फेसबुक के माध्यम से इन चारों स्कूलों का पारस्परिक सम्प्रेषण/अन्त:क्रिया। इसमें वे अपने अन्य साथियों के साथ अपने विचारों व अनुभवों को साझा कर सकते थे, यहाँ तक कि अपने अपरिष्कृत फुटेज, साक्षात्कारों और अपलोड किए हुए ट्रेलरों पर फीडबैक भी दे सकते थे। प्रोजेक्ट के समापन पर हर स्कूल में एक फिल्म समारोह का आयोजन होना था। इसकी योजना और डिजाइन छात्रों को ही बनानी थी। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल प्रोजेक्ट में भाग लेने वाले चारों स्कूलों द्वारा निर्मित बारह फिल्में प्रदर्शित की जानी थीं।

मैंने स्वेच्छा से सुगमकर्ता बनना स्वीकार किया। यह मेरी जिम्मेदारी थी कि मैं एक ऐसे वातावरण का निर्माण करूँ जिसमें विद्यार्थी चर्चा और कार्यकलाप के माध्यम से प्रोजेक्ट के सभी पहलुओं में भाग ले सकें। यह एक सरल काम था–मुझे सातवीं से दसवीं कक्षा तक के बच्चों को कैमरे का प्रयोग करने, स्वतंत्र रूप से सोचने और फिल्मों पर चिन्तन करने, और दूरवर्ती दर्शकों के लिए फिल्म बनाने की प्रक्रिया और चर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना था।

हालाँकि स्वीडन और वेल्स में यह प्रोजेक्ट स्कूल की नियमित प्रक्रिया का हिस्सा बन गया था। वहाँ हफ्ते में कुछ घण्टे वीडियो प्रोजेक्ट के लिए नियत कर दिए गए थे। लेकिन हम चामराजनगर में ऐसा नहीं कर पाए, क्योंकि इस काम के लिए किसी पूर्णकालिक व्यक्ति को काम पर रखने के लिए संसाधनों की कमी थी। मैं अपने व्यावसायिक कारणों से इस प्रोजेक्ट को पूरा समय दे पाने में असमर्थ था। मुझे प्रोजेक्ट के स्थान पर मात्र पहुँचने के लिए ही पाँच घण्टे की यात्रा करनी पड़ती थी। इसलिए हमने गर्मियों की छुट्टियाँ चुनीं। ऐसे विषय चुने गए जिनसे दूरवर्ती दर्शकों को हमारी संस्कृति का पता लगे और वे उससे परिचित हों। दीनबन्धु स्कूल के बच्चों ने जो विषय चुने वे इस प्रकार थे–'हमारा लोकसाहित्य', 'हमारा भोजन', 'आय के सहायक स्रोत' और 'गुड़ बनाना'। शुरू के कुछ दिनों में फिल्म निर्माण की प्रक्रिया सिखाई गई। उसके बाद उन्हें अपने चुने हुए विषय पर पढ़कर, फील्ड में जाकर और लोगों/विषय के विशेषज्ञों से बातचीत करके जानकारी हासिल करनी थी। ये सारे काम उन्हें बिना बड़ों की मदद लिए खुद ही करने थे। अगर कभी कोई बड़ा उनके साथ जाता भी था तो उसका कारण सिर्फ सुरक्षा का ध्यान रखना था, क्योंकि कभी–कभी बच्चों को अपरिचित क्षेत्रों में भी जाना पड़ता था। जब उन्हें लगा कि उनके पास यथेष्ट जानकारी है तब उन्होंने अपने समूह में बैठकर पटकथा लिखी और प्रोडक्शन डिजाइन तैयार किया।

वैसे तो कैमरा संचालन और विषय–वस्तु की रचना के लिए सभी बच्चे समान रूप से जिम्मेदार थे। लेकिन काम की आसानी के लिए समूह के हर बच्चे को एक विशेष जिम्मेदारी सौंपी गई जैसे, टीम लीडर, प्रोडक्शन मैनेजर, उपकरण प्रभारी या इन–चार्ज और लेखाकार या एकाउंटेण्ट। प्रोडक्शन की प्रभावी योजना के लिए हर टीम के लिए 25000 रुपए की बजट सीमा तय की गई। यह काल्पनिक राशि कार्यकारी पूँजी के रूप में दी गई। उन्हें उपकरण के उपयोग या किसी और संसाधन के उपयोग के लिए व्यय तय करना था। लेखाकार का काम था खर्चों पर नजर रखना और अगर बजट सीमा से बाहर जाने लगे तो टीम को सावधान करना। उन्हें 'दी गई राशि' को ध्यान में रखते हुए प्रोडक्शन को डिजाइन करना था। पता नहीं कि खर्चों का हिसाब रखने के लिए 'पैसे' शब्द का प्रयोग करना सही था या नहीं, लेकिन इसने कुछ हद तक काम किया। मैं उन्हें प्रत्येक दिन के अन्त में हिसाब करते हुए और उसके अनुसार अपने प्रोडक्शन के डिजाइन की पुनर्रचना करते हुए देखता था। लेकिन बाद में दो टीमों ने इस नियम का पालन नहीं किया और उनका बजट सीमा से बाहर चला गया। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो बस वे मुस्कुरा

भर दिए। पर हर दिन वे अपनी शूट की हुई फुटेज देखते। उसकी कमियों पर और जो काम ठीक से नहीं हुआ उस पर लम्बी चर्चा करते और अगले दिन के प्रोडक्शन की योजना बनाते। जरूरत पड़ने पर शूट के लिए आवश्यक अपरिचित लोगों से भी सम्पर्क करते।

सम्पादन की प्रक्रिया के लिए स्कूल के कम्प्यूटरों का उपयोग किया गया। सम्पादन की बारीकियों को समझने के बाद उन्होंने अपनी पटकथा/शॉट्स अच्छी तरह से देखे और सम्पादन की योजना बनाई। कुछ दिनों बाद जब एक टीम विशेष 'गुड़ बनाने' वाली फिल्म पर काम कर रही थी तब सदस्यों को लगा कि उनके पास पर्याप्त शॉट्स नहीं हैं और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या वे एक दिन और शूट कर सकते हैं? वे यह बताना नहीं भूले कि वे अपने बजट की सीमा के भीतर ही हैं! "ठीक है, अगर दूसरी टीमें मान जाएँ और आपके पास अपने शॉट्स की सूची है तो आप एक दिन और शूट कर सकते हैं।" मैंने कहा। एक घण्टे के अन्दर शॉट्स की सूची और दूसरी टीमों की सहमति दोनों तैयार थीं!

दसवीं कक्षा की जो टीम 'आय के सहायक स्रोत' पर फिल्म बना रही थी, उसके सदस्यों को सम्पादन के दौरान पता चला कि उनके सारे शॉट्स वास्तव में लोगों की आय के मुख्य स्रोत पर थे। निराशा के एक दौर के बाद उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या वे अपनी पटकथा को फिर से लिखकर एक भिन्न फिल्म बना सकते हैं। मैं मान गया। वे अगले दिन वापस आकर बोले कि उनकी समस्या सुलझ नहीं रही क्योंकि उन्हें अपनी कहानी के लिए सूत्र नहीं मिल रहा। मैंने उनसे कहा कि वे साथ बैठकर फुटेज की समीक्षा करें और उसमें मौजूद सामान्य तत्व का पता लगाएँ। जब वे लौटे तो उनकी आँखों में एक चमक थी, "हमने जिन–जिन गतिविधियों को शूट किया है वे प्रकृति स्नेही हैं। पर्यावरण को हानि नहीं पहुँचातीं हैं और कुछ गतिविधियाँ तो ऐसी हैं जिनमें कचरे से दैनिक उपयोग की वस्तुओं का निर्माण किया गया है।" तो अब 'आय के सहायक स्रोत' नामक फिल्म 'WorkingHands' बन गई जिसमें ऐसी स्थानीय पहलों के बारे में बताया गया था जो कचरे का री–सायकिलिंग करती थीं एवं अनेक लोगों को रोजगार मुहैया कराती थीं।

फिल्में पूरी हुईं और फिल्म समारोह के आयोजन का समय आ गया। कुछ लोगों ने स्वेच्छा से कार्यक्रम के प्रबन्धन काम सम्भाला, कुछ ने प्रचार का काम किया (निमंत्रण पत्र और पोस्टर को डिजाइन करना, प्रेस नोट लिखना, प्रेस के साथ बैठक आयोजित करना, प्रेस को सम्बोधित करना), अन्य लोगों ने स्वीडिश और वेल्श स्कूलों की फिल्मों को कन्नड़ में अनुवाद करने का बीड़ा उठाया। उन्होंने बड़े ध्यानपूर्वक पूरे कार्यक्रम की योजना बनाई। उसके हर भाग का अभ्यास किया। कार्यक्रम वाले दिन अपनी और डब की हुई फिल्मों को 300 महत्त्वपूर्ण लोगों के सामने प्रस्तुत किया,जिनमें बच्चे, उनके माता–पिता और आसपास के गाँव के लोग शामिल थे। लोकेश नामक किशोर ने इस कार्यक्रम को आयोजित करने की जिम्मेदारी उठाई थी। उसने किराए पर कुर्सियाँ और माइक/लाउडस्पीकर आदि की व्यवस्था करते समय किराए को लेकर बहुत मोल–भाव किया था, प्रेस की उपस्थिति सुनिश्चित की थी और भी कई चीजों का ध्यान रखा था। उसने बाद में कहा कि इस पूरे अनुभव ने उसे इतना आत्मविश्वासी बना दिया है कि अब वह किसी भी कार्यक्रम का आयोजन कर सकता है।

आई.एस.पी. के दूसरे वर्ष में दीनबन्धु स्कूल में चार टीमों ने (जिसमें सातवीं कक्षा का नया बैच भी शामिल था) चार फिल्में बनाईं। फिल्में वनपीपल द्वारा प्रदान किए गए व्यापक विषय–पर्यावरण की समस्याएँ, समानता और न्याय–के अनुरूप थीं। तीन दिनों की गहन चर्चा के बाद बच्चों ने इन विषयों पर फिल्म बनाने का निर्णय लिया–वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण व बाल मजदूरी और चौथी टीम ने बचपन पर एक संगीत वीडियो बनाने का फैसला किया। उन्होंने विषय की अपनी समझ को स्थानीय वास्तविकता के साथ सन्दर्भीकृत करने की कोशिश की। उन्होंने सिर्फ लक्षणों पर ही नहीं वरन उनके अन्तर्निहित मुद्दों पर भी ध्यान दिया और समाधान की खोज भी की। खोज करने एवं विभिन्न लोगों, संस्थाओं और अनुभवों से प्राप्त जानकारी के माध्यम से उनका नजरिया व्यापक हुआ तथा उनकी अवधारणाएँ स्पष्ट हुईं। अपने चुने हुए विषय के बारे में जब भी उन्हें

कोई नया प्रासंगिक सुराग मिलता तो उसका पता लगाने और उसे जाँचने में वे जरा भी नहीं झिझकते थे।

इन सब बातों से जो खुलासा मेरे सामने हुआ वह निर्मित फिल्मों की तुलना में कहीं अधिक था। सारा अधिगम अनुभव और चिन्तन के माध्यम से हो रहा था। बच्चे अवलोकन कर रहे थे, सोच रहे थे, खोज कर रहे थे और अपनी समझ के अनुसार काम कर रहे थे। उन्होंने विचारों का आदान–प्रदान किया और चुनौतियों का आनन्द लिया। वे आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बन गए थे। इस प्रक्रिया से मुझे एहसास हुआ कि इसमें मुख्य बात यह नहीं थी कि बच्चों के हाथों में कोई उपकरण या माध्यम सौंप दिया जाए, मुख्य बात यह थी कि सीखने के लिए उन्हें समुचित स्थान उपलब्ध कराया जाए और स्वतंत्रता सुनिश्चित की जाए। यह उनकी यात्रा थी। उनकी समझ को सन्दर्भीकृत करने की इस यात्रा में मैं तो बस उनका सहयात्री था, जो कभी–कभी एक अवलोकनकर्ता बन जाता था। जब जयदेव, इनी और मैं बच्चों को सोचने और अपने निष्कर्ष तक पहुँचने में उनकी सहायता करते थे तब हमें लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। इसके लिए हम उन्हें ढेर सारी प्रेरणा देने के साथ–साथ जानकारी और चर्चाओं के लिए प्रचुर अवसर भी देते थे। पिछले दो वर्षों में, जैसे–जैसे दीनबन्धु स्कूल के बच्चों ने वीडियो कैमरा की सहायता से मुद्दों का पता लगाया और अपने अनुभवों पर चिन्तन किया, वैसे–वैसे मैंने बहुधा प्रयोग में लाए जाने वाले इन शब्दों का सही अर्थ समझना शुरू कर दिया है जो इस प्रकार हैं–"बच्चों के अधिगम का सुगमीकरण करना।"

नटेश *उल्लाल वृत्तचित्र निर्माता हैं और बंगलौर में रहते हैं। वेल्स के वनपीपल प्रोडक्शन्स नामक फिल्म निर्माता संगठन के सदस्य हैं। वे वीडियो प्रलेखन के क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं और पिछले 23 सालों से फिल्में बना रहे हैं। वे सामाजिक विकास में लगे संगठनों के लिए पर्यावरण, बाल–अधिकार और प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित फिल्में बनाते रहते हैं। उनसे nateshullal@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*